Totalbhakti.com

हरतालिका तीज व्रत कथा

कहते हैं कि इस व्रत दस महात्मय कि कथा भगवान शिव ने पारवती जी को उनके पूर्व जन्म डीके स्मरण करवाने के मकसद से इस प्रकार से कही थी--
हे गौरी! पर्वतराज हिमालय पर गंगा के तट पर तुमने अपनी बाल्य वास्ता मे अधोमुखी होकर घोर ताप किया था. इस अवधि मे तुमने अन्न न खा कर केवल हवा का ही सेवन किया था. इस अवधि मे तुमने अन्न न खा कर केवल हवा का ही सेवन किया था. इतनी अवधी तुमने सूखे पत्ते चबा कर काटा था.

माघ की शीतलता मे तुमने निरंतर जल मे प्रवेश कर ताप किया था. वैशाख की जला देने वाली गर्मी मे पंचाग्नि से शारीर को तपाया. श्रावन की मुसलाधार वर्षा मे खुले असमान के निचे बिना अन्न जल ग्रहण किये व्यतीत किया.
तुम्हारी इस कष्ट दायक तपस्या को देख कर तुम्हारे पिता बहुत दुखी हुए और नाराज़ होते थे. तब एक दिन तुम्हारी तपस्या और पिता की नाराजगी को देख कर नारद जी तुम्हारे घर पधारे.

तुम्हारे पिता द्वारा आने का कारण पूछने पर नारद जी बोले - हे गिरिराज! मै भगवान् विष्णु के भेजने पर यहाँ आया हूँ . आपकी कन्या की घोर तपस्या से प्रसन्न होकर वह उससे विवाह करना चाहते हैं इस बारे मै मैं आपकी राय जाना चाहता हूँ . " नारद जी की बात सुन कर श्रीमान यदि स्वयं विष्णु मेरी कन्या का वरण करना चाहते हैं तोह मुझे क्या आपति हो सकती हैं . ये तोह स्वयं ब्रह्मा है. यह तो हर पिता की इच्छा होती है की उसकी पुत्री सुख सम्पदा से युक्त पति के घर की लक्ष्मी बने . "

नारद जी तुम्हारे पिता की स्वीकृति पाकर विष्णु जी के पास गए और उन्होंने विवाह तय होने का समाचार सुनाया. परन्तु जब तुम्हे इस विवाह के बारे में पता चला तो तुम्हारे दुःख का ठिकाना ना रहा . तुम्हे इस प्रकार से दुखी देख कर तुम्हारी एक सहेली ने तुम्हारे दुःख का कारण पूछने पर्तुमने बताया - की मैंने सच्चे मन से भगवान् शिव का वरण किया है, किन्तु मेरे पिता ने मेरा विवाह विष्णु जी के साथ तय कर दिया है . में विचित्र धर्म संकट मै हूँ अब मेरे पास प्राण त्याग देने के अलावा कोई और उपाय नहीं बचा है. तुम्हारी सखी बहुत ही समझदार थी. उसने कहा प्राण छोरने का यहाँ कारण ही क्या है ? संकट के समय धेर्य से काम लेना चाहिए . भारतीय नारी के जीवन की सार्थकता इस्सी मै है की जिससे मान से पति रूप से एक बार वरण कर लिया, जीवन पर्यंत उस्सी से निर्वाह करें. सची अवस्था और एक निष्ठां के समस्त भगवान् भी असहाय हैं . मै तुम्हे घनघोर वन मै ले चलती हूँ , जो साधना थल भी है और जहा तुम्हारे पिता तुम्हे खोज भी नहीं पाएंगे , मुझे पूर्ण विश्वास है की इश्वर अवश्य ही तुम्हारी सहायता करेंगे.

तुमने ऐसा ही किया , तुम्हारे पिता तुम्हे घर मै न पा कर बड़े चिन्तत और दुखी हुए. वह सोचने लगे की मैंने तोह विष्णु से अपनी पुत्री का विवाह तय किया है तभी भगवान् विष्णु बारात ले कर आ गये और और कन्या घर पर नहीं मिली तोह बहुत अपमान होगा , ऐसा विचार कर पर्वत राज ने चारो ओर तुम्हारी खोज सुरु करव दी इधर तुम्हारी खोज होती रही उधर तुम अपनी सहेलुई के साथ तट पर एक गुफा मै मै मेरी आराधना मै लीं रहने लगी, भाद्रपद तृतीय शुक्ल का हस्त नक्षत्र था. उस दिन तुमने रेत की शिवलिं का निर्माण किया रात भर मेरी स्तुती मे गीत गा कर जागरण किया तुम्हारी इस कठोर तपस्या से मेरा आसन हिल उठा और मे शीघ्र ही मे तुम्हारे पास पंहुचा और तुमसे वर मागने को कहा तब अपनी तपस्या के फली भीत मुझे अपने समक्ष पाकर तुमने कहा मे आप की सचे मन से पति के रूप मे वरण कर चुकी हूँ . यदि आप यहाँ सच्चे मान से मेरी तपस्या से प्रसन हो कर यहाँ पधारे हैं तो मुझे अपनी अर्धांगनी के रूप मे स्वीकार कर लीजिये . तब तथास्तु कह कर मे कैलाश पर्वत पर लौट गया, प्रातः होते ही तुमने पूजा की समस्त सामग्री नदी मे प्रवाहित कर के अपनी सखी सहित व्रत का वरण किया उसी समय गिरी राज अपने बंधू बांधवों के साथ तुम्हे खोजते हुए वहा पहुचे. तुम्हारी दशा देख कर अत्यंत दुखी हुए और तुम्हारी इस कठोर तपस्या का कारण पूछा . तब तुमने कहा - पिता जी मैंने अपने जीवन का अधिकांश वक़्त कठोर तपस्या मे बिताया हिया . मेरी इस तपस्या मे केवल उद्येश्य महादेव जी को पति रूप मे प्राप्त करना था. आज मे अपनी तपस्या की कसोटी पर खरी उतर चुकी हूँ चुकी आप मेरा विवाह विष्णु जी से करने का निश्य कर चुके थे , इस्सी लिए मै अपने आराध्य की तलाश मै घर से चली गयी थी . अब मै आप के साथ घर इस शर्त पर चलूंगी की आप मेरा विवाह महादेव जी के साथ करेंगे

पूर्ण विराम . पर्वतराज जी ने मेरी इच्छा स्वीकार कर ली और तुम्हे घर वापस ले आये . कुछ समय बाद उन्होंने पुरे विधि विधान के साथ हमारा विवाह किया , भगवान् शिव ने आके कहा - है पारवती! भाद्रपद की शुक्ल तृतीय की तुमने मेरी आराधना कर के जो व्रत की था उसी के परिणाम स्वरुप हम दोनों का विच्वः संभव हो सका. इस वरात का महत्व यह है की मै इस व्रत की पूर्ण निष्ठां से करने वाली प्रत्येक स्त्री को मंवांचित फल देता हूँ . इस वरत को हरतालिका इस लिए कहा जाता है क्यिकी पारवती जी की सखी उन्हें पिता और प्रदेश से हर कर जंगल मै ले गयी थी. हरत अर्थात हरण करना और तालिका अर्थत सखी .

भगवान् शिव ने पारवती जी से कहा कि इस वरात को जो भी स्त्री पूर्ण श्रधा से करेगी उससे तुम्हारी तरह अचल सुहाग प्राप्त होगा.

www.totalbhakti.com